ايَاتُهَا ٢٢ ﴿٥٨﴾ سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ ﴿١٠٥﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٣

सूरए मुजादलह मदनिय्या है, इस में बाईस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا وَ تَشْتَكِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ۖۗ وَ

बेशक **अल्लाह** ने सुनी उस की बात जो तुम से अपने शोहर के मुआ़मले में बह़स करती है[2] और **अल्लाह** से शिकायत करती है और

اللّٰهُ یَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ﴿۱﴾ اَلَّذِیْنَ یُظٰهِرُوْنَ

अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा है बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है वोह जो तुम में अपनी बीबियों को

مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔیْ وَلَدْنَهُمْ ؕ

अपनी मां की जगह कह बैठते हैं[3] वोह उन की माएं नहीं[4] उन की माएं तो वोही हैं जिन से वोह पैदा हैं[5]

وَ اِنَّهُمْ لَیَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَ زُوْرًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ

और वोह बेशक बुरी और निरी झूट बात कहते हैं[6] और बेशक **अल्लाह** ज़रूर मुआ़फ़ करने वाला

1 : सूरए मुजादलह मदनिय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़, बाईस 22 आयतें, चार सो तिहत्तर 473 कलिमे, एक हज़ार सात सो बानवे 1792 ह़र्फ़ हैं। **2 :** वोह ख़ौला बिन्ते सा'लबा थीं औस बिन साबित की बीबी। **शाने नुज़ूल :** किसी बात पर औस ने उन से कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है, येह कहने के बा'द औस को नदामत हुई, येह कलिमा ज़मानए जाहिलिय्यत में त़लाक़ था, औस ने कहा मेरे ख़याल में तू मुझ पर ह़राम हो गई, ख़ौला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर तमाम वाक़िआत अ़र्ज़ किये और अ़र्ज़ किया कि मेरा माल ख़त्म हो चुका मां बाप गुज़र गए उ़म्र ज़ियादा हो गई बच्चे छोटे छोटे हैं उन के बाप के पास छोड़ूं तो हलाक हो जाएं अपने साथ रखूं तो भूके मर जाएं, क्या सूरत है कि मेरे और मेरे शोहर के दरमियान जुदाई न हो ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तेरे बाब में मेरे पास कोई हुक्म नहीं या'नी अभी तक ज़िहार के मुतअ़ल्लिक़ कोई हुक्मे जदीद नाज़िल नहीं हुवा, दस्तूरे क़दीम येही है कि ज़िहार से औ़रत ह़राम हो जाती है, औ़रत ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم औस ने त़लाक़ का लफ़्ज़ न कहा, वोह मेरे बच्चों का बाप है और मुझे बहुत ही प्यारा है, इसी त़रह़ वोह बार बार अ़र्ज़ करती रही और जवाब ह़स्बे ख़्वाहिश न पाया तो आस्मान की त़रफ़ सर उठा कर कहने लगी या **अल्लाह** तआ़ला ! मैं तुझ से अपनी मोह़ताजी व बे कसी और परेशान ह़ाली की शिकायत करती हूं, अपने नबी पर मेरे ह़क़ में ऐसा हुक्म नाज़िल फ़रमा जिस से मेरी मुसीबत रफ़्अ़ हो, ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया ख़ामोश हो, देख चेहरए मुबारके रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर आसारे वह़्य ज़ाहिर हैं, जब वह़्य पूरी हो गई तो फ़रमाया अपने शोहर को बुला, औस ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूर ने येह आयतें पढ़ कर सुनाई। **3 :** या'नी ज़िहार करते हैं। **ज़िहार** इस को कहते हैं कि अपनी बीबी को मह़रमाते नसबी या रज़ाई के किसी ऐसे उ़ज़्व से तश्बीह दी जाए जिस को देखना ह़राम है मसलन बीबी से कहे कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है या बीबी के ऐसे उ़ज़्व को जिस से वोह ता'बीर की जाती हो या उस के जुज़्वे शाइअ़ को मह़रमात के ऐसे उ़ज़्व से तश्बीह दे जिस का देखना ह़राम है मसलन येह कहे कि तेरा सर या तेरा निस्फ़ बदन मेरी मां की पीठ या उस के पेट या उस की रान या मेरी बहन या फूफी या दूध पिलाने वाली की पीठ या पेट के मिस्ल है तो ऐसा कहना ज़िहार कहलाता है। **4 :** येह कहने से वोह माएं नहीं हो गईं। **5 मस्अला :** और दूध पिलाने वालियां ब सबबे दूध पिलाने के माओं के हुक्म में हैं और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात ब सबबे कमाल हुरमत माएं बल्कि माओं से आ'ला हैं। **6 :** जो बीबी को मां कहते हैं, उस को किसी त़रह़ मां के साथ तश्बीह देना ठीक नहीं।

www.dawateislami.net

غَفُوْرٌ ﴿٢﴾ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا

और बख़्शने वाला है और वोह जो अपनी बीबियों को अपनी मां की जगह कहें[7] फिर वोही करना चाहें जिस पर इतनी बड़ी बात कह चुके[8]

فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا

तो उन पर लाज़िम है[9] एक बर्दा (ग़ुलाम) आज़ाद करना[10] क़ब्ल इस के कि एक दूसरे को हाथ लगाएं[11] येह है जो नसीह़त तुम्हें की जाती है और अल्लाह तुम्हारे

تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٣﴾ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ

कामों से ख़बरदार है फिर जिसे बर्दा न मिले तो[12] लगातार दो महीने के रोज़े[13] क़ब्ल

قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ؕ ذٰلِكَ

इस के कि एक दूसरे को हाथ लगाएं[14] फिर जिस से रोज़े भी न हो सकें[15] तो साठ मिस्कीनों का पेट भरना[16] येह

لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ

इस लिये कि तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखो[17] और येह अल्लाह की ह़दें हैं[18] और काफ़िरों के लिये दर्दनाक

اَلِيْمٌ ﴿٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ

अ़ज़ाब है बेशक वोह जो मुख़ालफ़त करते हैं अल्लाह और उस के रसूल की ज़लील किये गए जैसे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ

उन से अगलों को ज़िल्लत दी गई[19] और बेशक हम ने रोशन आयतें उतारीं[20] और काफ़िरों के लिये ख़्वारी का

7 : या'नी उन से ज़िहार करें **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बांदी से ज़िहार नहीं होता अगर उस को महरमात से तश्बीह दे तो मुज़ाहिर (ज़िहार करने वाला) न होगा। **8 :** या'नी इस ज़िहार को तोड़ देना और हुरमत को उठा देना। **9 :** कफ़्फ़ारा ज़िहार का, लिहाज़ा उन पर ज़रूरी है **10 :** ख़्वाह वोह मोमिन हो या काफ़िर सग़ीर हो या कबीर मर्द हो या औ़रत अलबत्ता मुदब्बर और उम्मे वलद और ऐसा मुकातब जाइज़ नहीं जिस ने बदले किताबत में से कुछ अदा किया हो। **11 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इस कफ़्फ़ारे के देने से पहले वती और इस के दवाई (अस्बाब) ह़राम हैं। **12 :** इस का कफ़्फ़ारा **13 :** मुत्तसिल इस त़रह़ कि न उन दो महीनों के दरमियान रमज़ान आए न उन पांच दिनों में से कोई दिन आए जिन का रोज़ा मम्नूअ़ है और न किसी उ़ज़्र से या बिग़ैर उ़ज़्र के दरमियान से कोई रोज़ा छोड़ा जाए, अगर ऐसा हुवा तो अज़ सरे नौ रोज़े रखने पड़ेंगे। **14 मसाइल :** या'नी रोज़ों से जो कफ़्फ़ारा दिया जाए उस का भी जिमाअ़ और दवाइ़ये जिमाअ़ से मुक़द्दम होना ज़रूरी है और जब तक वोह रोज़े पूरे हों ख़ावन्द बीवी में से कोई किसी को हाथ न लगाए। **15 :** या'नी उसे रोज़े रखने की क़ुव्वत ही न हो बुढ़ापे या मरज़ वग़ैरा के बाइस या रोज़े तो रख सकता हो मगर मुतवातिर व मुत्तसिल न रख सकता हो **16 :** या'नी साठ मिस्कीनों को खाना देना और येह इस त़रह़ कि हर मिस्कीन को निस्फ़ साअ़ गेहूं या एक साअ़ खजूर या जव दे और अगर मिस्कीनों को इस की क़ीमत दी या सुब्हो शाम दोनों वक़्त उन्हें पेट भर कर खिला दिया जब भी जाइज़ है। **मस्अला :** इस कफ़्फ़ारे में येह शर्त़ नहीं कि एक दूसरे को हाथ लगाने से क़ब्ल हो ह़त्ता कि अगर खाना खिलाने के दरमियान में शोहर और बीबी में क़ुर्बत वाक़ेअ़ हुई तो नया कफ़्फ़ारा लाज़िम न होगा। **17 :** और ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी करो और जाहिलिय्यत के त़रीक़े छोड़ो। **18 :** इन को तोड़ना और इन से तजावुज़ करना जाइज़ नहीं। **19 :** रसूलों की मुख़ालफ़त करने के सबब। **20 :** रसूलों के सिद्क़ पर दलालत करने वाली।

www.dawateislami.net

مُّهِيْنٌ ۝٥ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰىهُ

अ़ज़ाब है जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा[21] फिर उन्हें उन के कौतक (करतूत) जता देगा[22] अल्लाह ने उन्हें गिन

اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

रखा है और वोह भूल गए[23] और हर चीज़ अल्लाह के सामने है ऐ सुनने वाले क्या तू ने न देखा कि अल्लाह जानता है

مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ

जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[24] जहां कहीं तीन शख़्सों की सरगोशी हो[25] तो चौथा

رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَاۤ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْثَرَ

वोह मौजूद है[26] और पांच की[27] तो छटा वोह[28] और न इस से कम[29] और न इस से ज़ियादा की

اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ

मगर येह कि वोह उन के साथ है[30] जहां कहीं हों फिर उन्हें क़ियामत के दिन बता देगा जो कुछ उन्हों ने किया बेशक

اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ

अल्लाह सब कुछ जानता है क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हें बुरी मश्वरत (मुशावरत) से मन्अ़ फ़रमाया गया था फिर

يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ

वोही करते हैं[31] जिस की मुमानअ़त हुई थी और आपस में गुनाह और ह़द से बढ़ने[32] और रसूल की ना फ़रमानी के

الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ

मश्वरे करते हैं[33] और जब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर होते हैं तो उन लफ़्ज़ों से तुम्हें मुजरा (सलाम) करते हैं जो लफ़्ज़ अल्लाह ने तुम्हारे ए'ज़ाज़ में न कहे[34]

---

21 : किसी एक को बाक़ी न छोड़ेगा। **22 :** रुस्वा और शरमिन्दा करने के लिये। **23 :** अपने आ'माल जो दुन्या में करते थे। **24 :** उस से कुछ पोशीदा नहीं। **25 :** और अपने राज़ आपस में गोश दर गोश कहें और अपनी मुशावरत पर किसी को मुत्तलअ़ न करें **26 :** या'नी अल्लाह तआ़ला उन्हें मुशाहदा करता है उन के राज़ों को जानता है। **27 :** सरगोशी हो **28 :** या'नी अल्लाह तआ़ला **29 :** या'नी पांच और तीन से **30 :** अपने इ़ल्मो क़ुदरत से **31 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद और मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो आपस में सरगोशियां करते और मुसल्मानों की त़रफ़ देखते जाते और आंखों से उन की त़रफ़ इशारे करते जाते ताकि मुसल्मान समझें कि उन के ख़िलाफ़ कोई पोशीदा बात है और इस से उन्हें रन्ज हो, उन की इस ह़रकत से मुसल्मानों को ग़म होता था और वोह कहते थे कि शायद इन लोगों को हमारे उन भाइयों की निस्बत क़त्ल या हज़ीमत (शिकस्त) की कोई ख़बर पहुंची जो जिहाद में गए हैं और येह उसी के मुतअ़ल्लिक़ बातें बनाते और इशारे करते हैं, जब येह ह़रकात मुनाफ़िक़ीन की बहुत ज़ियादा हुईं और मुसल्मानों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में इस की शिकायतें कीं तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सरगोशी करने वालों को मन्अ़ फ़रमा दिया लेकिन वोह बाज़ न आए और येह ह़रकत करते ही रहे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **32 :** गुनाह और ह़द से बढ़ना येह कि मक्कारी के साथ सरगोशियां कर के मुसल्मानों को रन्जो ग़म में डालते हैं। **33 :** और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी येह कि बा वुजूद मुमानअ़त के बाज़ नहीं आते और येह भी कहा गया है कि उन में एक दूसरे को राय देते थे कि रसूल की ना फ़रमानी करो। **34 :** यहूद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास आते तो "اَلسَّامُ عَلَيْكَ" कहते, साम मौत को कहते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के जवाब में "عَلَيْكُمْ" फ़रमा देते।

www.dawateislami.net

فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا یُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ یَصْلَوْنَهَا ۚ

और अपने दिलों में कहते हैं हमें अल्लाह अ़ज़ाब क्यूं नहीं करता हमारे इस कहने पर[35] उन्हें जहन्नम बस (काफ़ी) है उस में धंसेंगे

فَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ۝۸ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَیْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا

तो क्या ही बुरा अन्जाम ऐ ईमान वालो तुम जब आपस में मश्वरत करो तो

بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ مَعْصِیَتِ الرَّسُوْلِ وَ تَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَ التَّقْوٰی ؕ

गुनाह और ह़द से बढ़ने और रसूल की ना फ़रमानी की मश्वरत न करो[36] और नेकी और परहेज़ गारी की मश्वरत करो

وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝۹ اِنَّمَا النَّجْوٰی مِنَ الشَّیْطٰنِ

और अल्लाह से डरो जिस की त़रफ़ उठाए जाओगे वोह मश्वरत तो शैत़ान ही की त़रफ़ से है[37]

لِیَحْزُنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ لَیْسَ بِضَآرِّهِمْ شَیْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ

इस लिये कि ईमान वालों को रन्ज दे और वोह उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता बे हुक्मे ख़ुदा और

عَلَی اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۱۰ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِیْلَ لَكُمْ

मुसल्मानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये[38] ऐ ईमान वालो जब तुम से कहा जाए

تَفَسَّحُوْا فِی الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا یَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَ اِذَا قِیْلَ انْشُزُوْا

मजलिसों में जगह दो तो जगह दो अल्लाह तुम्हें जगह देगा[39] और जब कहा जाए उठ खड़े हो[40]

فَانْشُزُوْا یَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

तो उठ खड़े हो अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया[41] दरजे

دَرَجٰتٍ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ۝۱۱ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

बुलन्द फ़रमाएगा और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है ऐ ईमान वालो जब

35 : इस से उन की मुराद येह थी कि अगर ह़ज़रत नबी होते तो हमारी इस गुस्ताख़ी पर अल्लाह तआ़ला हमें अ़ज़ाब करता अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **36 :** और जो त़रीक़ा यहूद और मुनाफ़िक़ीन का है उस से परहेज़ करो **37 :** जिस में गुनाह और ह़द से बढ़ना और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी हो और शैत़ान अपने दोस्तों को इस पर उभारता है **38 :** कि अल्लाह पर भरोसा करने वाला टोटे (ख़सारे) में नहीं रहता। **39 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बद्र में ह़ाज़िर होने वाले अस्ह़ाब की इ़ज़्ज़त करते थे, एक रोज़ चन्द बद्री अस्ह़ाब ऐसे वक़्त पहुंचे जब कि मजलिस शरीफ़ भर चुकी थी, उन्हों ने हुज़ूर के सामने खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ किया, हुज़ूर ने जवाब दिया फिर उन्हों ने ह़ाज़िरीन को सलाम किया उन्हों ने जवाब दिया, फिर वोह इस इन्तिज़ार में खड़े रहे कि उन के लिये मजलिस शरीफ़ में जगह की जाए मगर किसी ने जगह न दी, येह सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को गिरां गुज़रा तो हुज़ूर ने अपने क़रीब वालों को उठा कर उन के लिये जगह की, उठने वालों को उठना शाक़ हुवा इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **40 :** नमाज़ के या जिहाद के या और किसी नेक काम के लिये और इसी में दाख़िल है ता'ज़ीमे ज़िक्रे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के लिये खड़ा होना। **41 : अल्लाह** और उस के रसूल

www.dawateislami.net

نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ

तुम रसूल से कोई बात आहिस्ता अ़र्ज़ करना चाहो तो अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दे लो[42] येह तुम्हारे लिये

لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ

बेहतर और बहुत सुथरा है फिर अगर तुम्हें मक़्दूर न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है क्या तुम इस से डरे

اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ

कि तुम अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़े दो[43] फिर जब तुम ने येह न किया और अल्लाह ने अपनी मेहर से

اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

तुम पर रुजूअ़ फ़रमाई[44] तो नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और उस के रसूल के फ़रमां बरदार रहो

ع ٢/٢ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ

और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर

اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ

अल्लाह का ग़ज़ब है[45] वोह न तुम में से न उन में से[46] वोह दानिस्ता झूटी क़सम

يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴﴾ ج اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

खाते हैं[47] अल्लाह ने उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है बेशक वोह बहुत ही बुरे

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इत़ाअ़त के बाइस **42 :** कि इस में बारयाबी बारगाहे रिसालत पनाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ता'ज़ीम और फ़ुक़रा का नफ़्अ़ है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बारगाह में जब अग़निया ने अ़र्ज़ों मा'रूज़ का सिल्सिला दराज़ किया और नौबत यहां तक पहुंच गई कि फ़ुक़रा को अपनी अ़र्ज़ पेश करने का मौक़अ़ कम मिलने लगा तो अ़र्ज़ पेश करने वालों को अ़र्ज़ पेश करने से पहले सदक़ा देने का हुक्म दिया गया और इस हुक्म पर ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़मल किया एक दीनार सदक़ा कर के दस मसाइल दरयाफ़्त किये, अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! वफ़ा क्या है ? फ़रमाया : तौहीद और तौहीद की शहादत देना, अ़र्ज़ किया : फ़साद क्या है ? फ़रमाया : कुफ़्रो शिर्क, अ़र्ज़ किया : ह़क़ क्या है ? फ़रमाया : इस्लाम व क़ुरआन और विलायत जब तुझे मिले, अ़र्ज़ किया : ह़ीला क्या है या'नी तदबीर ? फ़रमाया : तर्के ह़ीला, अ़र्ज़ किया : मुझ पर क्या लाज़िम है ? फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल की त़ाअ़त, अ़र्ज़ किया : अल्लाह तआ़ला से कैसे दुआ़ मांगूं ? फ़रमाया : सिद्क़ो यक़ीन के साथ, अ़र्ज़ किया क्या मांगूं ? फ़रमाया : आ़क़िबत, अ़र्ज़ किया : अपनी नजात के लिये क्या करूं ? फ़रमाया : ह़लाल खा और सच बोल, अ़र्ज़ किया : सुरूर क्या है ? फ़रमाया : जन्नत, अ़र्ज़ किया : राह़त क्या है ? फ़रमाया : अल्लाह का दीदार, जब ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इन सुवालों से फ़ारिग़ हो गए तो येह हुक्म मन्सूख़ हो गया और रुख़्सत नाज़िल हुई और सिवाए ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के और किसी को इस पर अ़मल करने का वक़्त नहीं मिला। (مدارک وخازن) ह़ज़रते मुर्तज़िम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया : येह इस की अस्ल है जो मज़ाराते औलिया पर तसद्दुक़ के लिये शीरीनी वग़ैरा ले जाते हैं। **43 :** ब सबब अपनी ग़रीबी व नादारी के। **44 :** और तर्के तक़्दीमे सदक़ा का मुआख़ज़ा तुम पर से उठा लिया और तुम को इख़्तियार दे दिया **45 :** जिन लोगों पर अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब है उन से मुराद यहूद हैं और इन से दोस्ती करने वाले मुनाफ़िक़ीन। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने यहूद से दोस्ती की और उन की ख़ैर ख़्वाही में लगे रहते और मुसल्मानों के राज़ उन से कहते। **46 :** या'नी न मुसल्मान न यहूदी बल्कि मुनाफ़िक़ हैं मुज़ब्ज़ब। **47 शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन नब्तल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस में ह़ाज़िर रहता और यहां की बात यहूद के पास पहुंचाता, एक रोज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ

काम करते हैं उन्हों ने अपनी क़समों को[48] ढाल बना लिया है[49] तो अल्लाह की राह से रोका[50] तो उन के लिये

عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

ख़्वारी का अ़ज़ाब है[51] उन के माल और उन की औलाद अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम

شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ

न देंगे[52] वोह दोज़ख़ी हैं उन्हें उस में हमेशा रहना जिस दिन अल्लाह उन सब को

جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ

उठाएगा तो उस के हुज़ूर भी ऐसे ही क़समें खाएंगे जैसी तुम्हारे सामने खा रहे हैं[53] और वोह येह समझते हैं कि उन्हों ने कुछ किया[54]

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ

सुनते हो बेशक वोही झूटे हैं[55] उन पर शैतान ग़ालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद

اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

भुला दी वोह शैतान के गुरोह हैं सुनता है बेशक शैतान ही का गुरोह हार में है[56]

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ

बेशक वोह जो अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वोह सब से ज़ियादा ज़लीलों में हैं अल्लाह

اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا

लिख चुका[57] कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊंगा और मेरे रसूल[58] बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला इ़ज़्ज़त वाला है तुम न पाओगे उन लोगों को

يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ

जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की[59] अगर्चे

दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ फ़रमा थे, हुज़ूर ने फ़रमाया इस वक़्त एक आदमी आएगा जिस का दिल निहायत सख़्त और वोह शैतान की आंखों से देखता है, थोड़ी ही देर बा'द अ़ब्दुल्लाह बिन नब्तल आया उस की आंखें नीली थीं, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया तू और तेरे साथी क्यूं हमें गालियां देते हैं ? वोह क़सम खा गया कि ऐसा नहीं करता और अपने यारों को ले आया उन्हों ने भी क़सम खाई कि हम ने आप को गाली नहीं दी, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **48 :** जो झूटी हैं **49 :** कि अपना जान व माल महफ़ूज़ रहे। **50 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन ने अपनी इस हीला साज़ी से लोगों को जिहाद से रोका और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मा'ना येह हैं कि लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से रोका **51 :** आख़िरत में **52 :** और रोज़े क़ियामत उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से न बचा सकेंगे **53 :** कि दुन्या में मोमिने मुख़्लिस थे। **54 :** या'नी वोह अपनी इन झूटी क़समों को कारआमद समझते हैं। **55 :** अपनी क़समों में और ऐसे झूटे कि दुन्या में भी झूट बोलते रहे और आख़िरत में भी, रसूल के सामने भी और ख़ुदा के सामने भी। **56 :** कि जन्नत की दाइमी ने'मतों से महरूम और जहन्नम के अबदी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार। **57 :** लौहे महफ़ूज़ में **58 :** हुज्जत के साथ या तलवार के साथ। **59 :** या'नी मोमिनीन से येह हो

www.dawateislami.net

كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ

वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों[60] येह हैं

كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से उन की मदद की[61] और उन्हें बाग़ों में

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा रहें **अल्लाह** उन से राज़ी[62] और वोह **अल्लाह** से

عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۲۲﴾ ع

राज़ी[63] येह **अल्लाह** की जमाअ़त है सुनता है **अल्लाह** ही की जमाअ़त काम्याब है

ايَاتُهَا ٢٤ — ٥٩ سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ ١٠١ — رُكُوْعَاتُهَا ٣

सूरए ह़श्र मदनिय्या है, इस में चौबीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱﴾

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है[2]

ही नहीं सकता और उन की येह शान ही नहीं और ईमान इस को गवारा ही नहीं करता कि ख़ुदा और रसूल के दुश्मन से दोस्ती करे। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बद दीनों और बद मज़्हबों और ख़ुदा व रसूल की शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी करने वालों से मुवद्दत व इख़्तिलात़ जाइज़ नहीं। **60 :** चुनान्चे ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ ने जंगे उहुद में अपने बाप जर्राह़ को क़त्ल किया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने रोज़े बद्र अपने बेटे अ़ब्दुर्रह़मान को मुबारज़त के लिये त़लब किया लेकिन रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने उन्हें इस जंग की इजाज़त न दी और मुस्अ़ब बिन उ़मैर ने अपने भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मैर को क़त्ल किया और ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने मामूं आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरा को रोज़े बद्र क़त्ल किया और ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब व ह़म्ज़ा व अबू उ़बैदा ने रबीआ़ के बेटों उ़त्बा और शैबा को और वलीद बिन उ़त्बा को बद्र में क़त्ल किया जो उन के रिश्तेदार थे, ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को क़राबत और रिश्तेदारी का क्या पास। **61 :** इस रूह़ से या **अल्लाह** की मदद मुराद है या ईमान या क़ुरआन या जिब्रील या रह़मते इलाही या नूर। **62 :** ब सबब उन के ईमान व इख़्लास व त़ाअ़त के **63 :** उस के रह़मो करम से **1 :** सूरए ह़श्र मदनिय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़, चौबीस 24 आयतें, चार सो पैंतालीस 445 कलिमे, एक हज़ार नव सो तेरह 1913 ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** येह सूरत बनी नज़ीर के ह़क़ में नाज़िल हुई, येह लोग यहूदी थे, जब नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो इन्हों ने हुज़ूर से इस शर्त़ पर सुल्ह़ की कि न आप के साथ हो कर किसी से लड़ें न आप से जंग करें, जब जंगे बद्र में इस्लाम की फ़त्ह़ हुई तो बनी नज़ीर ने कहा येह वोही नबी हैं जिन की सिफ़त तौरैत में है, फिर जब उहुद में मुसल्मानों को हज़ीमत की सूरत पेश आई तो येह शक में पड़े और इन्हों ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم और हुज़ूर के नियाज़ मन्दों के साथ अ़दावत का इज़्हार किया और जो मुआ़हदा किया था वोह तोड़ दिया और इन का एक सरदार का'ब बिन अशरफ़ यहूदी चालीस यहूदी सुवारों को साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा पहुंचा और का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पर्दे थाम कर क़ुरैश के सरदारों से रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के ख़िलाफ़ मुआ़हदा किया **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म देने से हुज़ूर इस ह़ाल पर मुत्तलअ़ थे और बनी नज़ीर से एक ख़ियानत और भी वाक़ेअ़ हो चुकी थी कि इन्हों ने क़ल्ए के ऊपर से सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net